रेत में डूब गया था पूरा नगर

बिमल श्रीवास्तव

पानी में डूबने की बात तो सुनी थी, किन्तु बालू में डूबना कुछ अजूबा सा लगता है। पर वास्तव में ऐसा हुआ है। और एक दो स्थानों पर नहीं बल्कि अनेकों स्थानों पर ऐसा हुआ है और अभी भी होता रहता है।

करीब तीन सौ वर्ष पूर्व 7 जून 1692 को जमैका (वेस्ट इंडीज़) के नगर पोर्ट रॉयल में एक ऐसी ही भयानक घटना घटी थी जिसमें 2000 से ज़्यादा लोग मारे गए थे।

सागर किनारे बसे पोर्ट रॉयल नगर में उस दिन दोपहर के वक्त एक भूकम्प आया था तथा उसके करीब दस मिनट बाद नगर का लगभग दो तिहाई भाग सागर में खो गया था। पहले तो उसे भूकम्प का ही असर समझा गया था। किन्तु यह भूकम्प एक सामान्य भूकम्प था और इतना शक्तिशाली नहीं था कि समूचे नगर को जल समाधि दिला देता। यही वजह थी कि कई वैज्ञानिक इस समस्या को लेकर उलझन में पड़ गए। यह भी देखा गया था कि नगर के मकान, बाज़ार गिरने-पड़ने या टूटने-फूटने की बजाय पूरे के पूरे खड़े-खड़े ही ज़मीन में धंस गए थे।

पोर्ट रॉयल नगर वास्तव में एक बदनाम नगर था। उस समय वह विश्व में गुलामों के व्यापार का बड़ा केंद्र था। उस नगर में अधिकतर कुख्यात अपराधी, समुद्री डकैत और लुटेरे आदि निवास करते थे। उस समय का कुख्यात समुद्री डाकू हेनरी मोरगन भी उसी नगर का निवासी था, किन्तु इस घटना से लगभग चार वर्ष पूर्व उसकी मृत्यु हो चुकी थी। वैसे हेनरी मोरगन को इससे पूर्व तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट ने माफी देकर जमैका का लेफ़्टिनेंट गवर्नर भी नियुक्त कर दिया था। इसीलिए अनेक लोगों का विचार था कि पोर्ट रॉयल नगर को ईश्वर ने उसकी आपराधिक करतूतों की सज़ा दी थी।

किन्तु दूसरी तरफ वैज्ञानिक अपने ढंग से इसका रहस्य ढूंढने में लगे थे। भूगर्भ शास्त्र के प्रोफेसर जॉर्ज आर. क्लार्क ने तीन सौ वर्ष पूर्व घटित घटना का कारण प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया है कि नगर का विनाश बालू में डूबने के कारण हुआ था।

वास्तव में पोर्ट रॉयल नगर की नींव किसी ठोस चट्टान के ऊपर नहीं थी, बल्कि एक कि.मी. लम्बी रेत की ढेरी पर थी। क्लार्क ने अपने अनुसंधान के दौरान देखा कि रेत की ऊपरी लगभग 20 मीटर की सतह रेत के ढीले ढेर जैसी थी। लगभग पानी और गीली रेत के मिश्रण जैसा। उसके नीचे केवल मिट्टी, कंकड़-पत्थर, रेत आदि थे। आज भी लगभग यही स्थिति है।

प्रोफेसर क्लार्क के अनुसार 7 जून 1692 को आए भूकम्प ने पोर्ट रॉयल नगर के नीचे की रेत को झकझोर दिया था तथा एक मिनट से भी कम समय में रेत ने अपनी जड़ें छोड़कर बहते पानी जैसा व्यवहार करना आरंभ कर दिया। इस कारण नगर के भवन तथा अन्य भारी वस्तुएं गीली तथा खोखली रेत में डूबने लगीं। प्राचीन उल्लेखों के अनुसार उस समय अनेक निवासी पूरे के पूरे गीली बालू में धंस कर गायब हो गए थे। कुछ ऐसे भी थे जो एक बार धंसने के बाद उभर कर ऊपर आए थे। ठीक उसी प्रकार जैसे नदी में डूबता व्यक्ति ऊपर-नीचे डूबता-उतराता है।

किन्तु सबसे भयानक अन्त उनका हुआ जो भूमि में आधे धंस गए थे। वह भूकम्प लगभग 6 मिनट तक चला था। भूकम्प के झटके के कारण रेत द्रव जैसा व्यवहार करने लगी, लेकिन झटके समाप्त होते ही फिर ठोस जैसा व्यवहार करने लगी। जो लोग रेत में आधे धंसे हुए थे, उन पर अब ठोस रेत ने चारों तरफ से दबाव डालना आरम्भ कर दिया। इससे उनका दम घुटने लगा और थोड़ी ही देर में उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। मृत्यु के बाद रेत से